Professor
C.M.S College, Darbha
nihat, Khutauna.

B.A. part I

Vedanta : Jagat

शंकर जगत को बाते जगत-मिथ्यात्व के सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हैं।

अद्वैतवाद में ब्रह्म की एकमात्र सत्ता को स्वीकार करके जगत को मिथ्या कहा जाता है। हम शंकर के जगत मिथ्यात्व को अच्छी तरह समझने के लिए प्रश्न पर विचार करेंगे

1. मिथ्यात्व का क्या अर्थ है?
2. ~~अमत~~ जगत किस अर्थ में मिथ्या है।

मिथ्यात्व का अर्थ - अद्वैत वेदान्त में मिथ्यात्व शब्द को कई तरह से समझाया जाता है एक परिभाषा में जो सत और असत दोनों से विलक्षण है वह मिथ्या है तार्किक दृष्टि से सद्सद्विलक्षण वस्तु अत: अनिर्वचनीय होती है अद्वैत वेदान्त में सत और ~~असत~~ असत शब्द आगमिक अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। सत वह है जो त्रिकालाबाधित है केवल वही पदार्थ सत है जो भूत, वर्तमान, भविष्यत तीनों कालों में बाधित न हो।

जगत किस अर्थ में मिथ्या है ?

अद्वैत वेदान्त की दृष्टि में जगत की स्वतन्त्र एवं निरपेक्ष सत्ता नहीं है। जगत अपनी सत्ता के लिए पूर्णतया ब्रह्म पर आश्रित है मायायुक्त ब्रह्म या ईश्वर इस जगत के कारण है। ब्रह्म जगत का अभिन्ननिमित्तोपादान कारण है। माया ब्रह्म की शक्ति है। माया के कारण ही निर्गुण एवं भेदरहित ब्रह्म प्रपंचात्मक जगत के रूप में आभासित होता है यहाँ शंकर अद्वैतेतर वेदान्तियों के निमित्तोपादान कारणत्व की धारणा को अस्वीकार करते हैं।

शंकर के अनुसार जगत मायारूप है और यथार्थ नहीं है। शंकर अनन्यत्व के दार्शनिक सिद्धांत का प्रतिपादन करते हुए स्पष्ट करते हैं कि जगत ब्रह्म से अनन्य है। अतः दोनों के मध्य सम्बंध की बात करना अनुचित है। वास्तव में तात्त्विक दृष्टि से ब्रह्म एवं जगत एक हैं जिनमें प्रथम सत है और द्वितीय आभासमात्र है।